प्रामाणिकता द्वारा सफलता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

प्रामाणिकता की निष्पति

प्रामाणिकता का अर्थ ईमानदारी है। ईमानदारी एक उच्च कोटि का मानवीय मूल्य है। मूल्य अपने आप में एक गुण है। भारतीय संस्कृति की मुख्य शाखा जैन संस्कृति में गुणों की पूजा की जाती है। पंच परमेष्ठी में अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय साधुओं के 108 गुणों का गुणानुवाद है। उन गुणों की माला फेरी जाती है। जिस व्यक्ति में ईमानदारी का गुण होता है वह हजार मणकों में से हीरे की भांति चमकता एक मणका होता है। ईमानदार व्यक्ति की सभी जगह प्रतिष्ठा होती है। लोग ईमानदार व्यक्ति पर विश्वास कर लेते हैं। ईमानदार व्यक्ति परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व में ख्याति का स्थान प्राप्त करता है। जिसमें प्रामाणिकता का गुण आ जाता है अन्य गुण अपने आप उसकी तरफ खीचे आ जाते हैं। प्रामाणिकता का पालन करने से खुशी एवं आनन्द की अनुभूति होती है।

ईमानदारी या प्रामाणिकता का सम्बन्ध सत्य से है। महात्मा गांधी ने लिखा "My life is my experiments with truth". उन्होंने आगे कहा सत्य ही भगवान् है अर्थात् Truth is God, God is truth. उन्होंने सत्य एवं ईमानदारी के आधार पर सैकड़ों वर्षों की गुलामी के भारतीयों को अहिंसक तरीके से अंग्रेजों से स्वतंत्रता दिलाई। जो व्यक्ति प्रामाणिक होता है, उसके साथ लोग सहज रूप से जुड़ जाते हैं। तभी कहा गया "Honesty is the

best policy". प्रामाणिक व्यक्ति अभय को प्राप्त होता है। उसे किसी का डर नहीं होता है। एक झूठ को छिपाने के लिए सैकड़ों झूठ बोलने पड़ते हैं। सत्य एक ही होता है जैसे इश्वर एक है। सत्य एक आदर्श है। यह अत्यन्त उच्च कोटि का मानवीय मूल्य है। कहा गया "सत्यमेव जयते"। आखिर सत्य की जीत होती है। प्रमाणिकता तथा सत्य एक सिक्के के दो पहलू हैं। जो प्रामाणिक होगा वह सत्यवादी अवश्य होगा। प्रामाणिकता एवं सत्य एक दूसरे के पूरक हैं। जो सत्यवादी होगा वह प्रामाणिक अवश्य होगा। प्रमाणिक व्यक्ति अहिंसावादी होगा। अहिंसा सभी धर्मों/दर्शनों की जननी है। सभी धार्मिक शास्त्र अहिंसा की गोद से जन्मे हैं। प्रायः हम देखते हैं कि प्रामाणिकता पर चलने वाले प्रतिष्ठान चिरंजीवी होते हैं। वे लम्बे समय तक अपना अस्तित्व बनाए रखते हैं। जबकि बेईमान प्रतिष्ठान मात्र कुछ समय में ही अस्तित्वहीन हो जाते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि ईमानदारी का अस्तित्व लम्बा है तथा बेइमानी का कुछ समय ही टिकती है। प्रामाणिकता मानव जाति के सामने एक आदर्श है। जिस पर कोई चले तो उसे सामाजिक ख्याति प्राप्त होती है। लोग उस व्यक्ति या प्रतिष्ठान पर विश्वास करते हैं। विश्वास दिलाया नहीं जाता, हो जाता है। जो दिलाया जाता है वह विश्वास नही कुछ और हैं। प्रामाणिकता की निष्पति विश्वास है। अगर कोई व्यक्ति समाज या विश्व में अपनी पहचान बनाना चाहता है, अपनी प्रतिष्ठा की सौरभ फैलाना चाहता है तो उसे प्रमाणिक, ईमानदार या सत्यावदी होना चाहिए।

ईमानदारी, सत्यवादिता प्रामाणिकता के पर्यायवाची हैं। ऐसा कहा जाता है "एक साधे सब सधे, सब साधे सब जात"। अगर आपने एक गुण जैसे प्रामाणिकता को साध

लिया, उसकी पूजा कर ली, तो मान लीजिए आप समाज के एक विश्वासपात्र व्यक्ति बन गये।

बच्चे का जीवन एक खुली पोथी होती है, एवं खाली स्लेट होती है। आप इस पर जो लिखेंगे यानि संस्कार देंगे उसी के अनुरूप वह ढल जायेगा। अतः बचपन से ही बच्चों में ईमानदारी, प्रामाणिकता, सत्यवादिता के संस्कार ढाले जायें तो ऐसे बच्चे आगे जाकर देश के सुसंस्कृत नागरिक बन सकते हैं। मानव जीवन लचीला है। आप जीवन को जैसी दिशा देंगे वैसी ही आपकी दशा बन जायेगी। अगर प्रारंभ से ही प्रामाणिकता को आत्मसात कर लिया जाय तो भविष्य में व्यक्ति कभी भी बेईमान नहीं बन सकता है।

प्रमाणिकता और सफलता

सफलता का अर्थ निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति। सफलता दो प्रकार की होती है– आंतरिक एवं बाह्य। आतंरिक सफलता एवं बाह्य सफलता के नियम अलग–अलग होते हैं। आत्म संतुष्टि सबसे बड़ी आंतरिक सफलता है। किसी अच्छे कार्य को करने में आपको प्रसन्नता एवं संतुष्टि प्राप्त होती है। मान लीजिए आपने सफलता हासिल कर ली है। बाह्य सफलता का मूल्यांकन समाज, राष्ट्र एवं विश्व करता है। आंतरिक सफलता का मूल्यांकन व्यक्ति स्वयं करता है। जब आज एक निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करते हैं तो समाज के लोगों द्वारा आपको सफल माना जाता है। सफलता एवं प्रामाणिकता एक सिक्के के दो पहलू हैं। अप्रामाणिक व्यक्ति सफल हो भी सकता है, लेकिन वह सफलता चिरजीवी नहीं रहती है।

दीर्घजीवी सफलता को टिकाए रखने के लिए लक्ष्य प्रामाणिक, कार्य पद्धति प्रमाणिक होना आवश्यक है। आप इतिहास को उठकार देख लेवें– महात्मा गाँधी, विनोबा भावे, आचार्य तुलसी, कबीर, गुरू नानकदेव, ईसा मसीह, मोहम्मद साहब, भगवान महावीर, कृष्ण, राम, अर्जुन अपने–अपने लक्ष्य में सफल क्यों हुए? क्योंकि उनके जीवन में सत्य था, ईमानदारी थी, प्रामाणिकता थी। इसका अर्थ यह हुआ कि सफलता के लिए कुछ मापदंडों की आवश्यकता है, उसमें प्रामाणिकता एक बहुत बड़ा मापदण्ड है। अप्रामणिक व्यक्ति रातो रात धनवान या अपने लक्ष्य में सफल हो सकते हैं, लेकिन जब उनकी बेईमानी का पर्दाफाश होता है तो वे इतने बदनाम हो जाते हैं कि हमेशा के लिए गर्त में चले जाते हैं।

प्रामाणिकता से ओतःप्रोत व्यक्ति अभय होगा। क्योंकि वह सत्य की राह पर चलता है। प्रामाणिक व्यक्ति या संस्था को सफलता हासिल करने में दीर्घ अवधि लगती है। जबकि अप्रामाणिक व्यक्ति लघु अवधि में सफलता प्राप्त कर लेता है। लेकिन दोनों की सफलता की तुलना की जाय तो निष्कर्ष निकलेगा कि प्रामाणिक सफलता दीर्घजीवी है तथा अप्रामाणिक सफलता लघुजीवी है। अच्छे समाज की संरचना के लिए प्रामाणिकता एक गुण के रूप में प्रतिष्ठित है। भारतीय संस्कृति गुण प्रधान संस्कृति है। वह हमेशा गुणों की पूजा करती है, व्यक्ति पूजा नहीं करती है।

ईमानदारी एक देवी है जो अगर व्यक्ति, बाजार, समाज, देश, विश्व में प्रतिष्ठित हो जाये तो यह धरती स्वर्ग बन जायेगी। प्रामाणिकता का एक रूप सत्य है। अप्रमाणिकता अनेक रूपात्मक है जिससे व्यक्ति संदेह में चला जाता है। प्रामाणिकता

का पाठ पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है तथा अप्रामाणिकता के लिए किसी प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। वह तो हमारे भीतर कषाय अर्थात् बुराई के रूप में जन्म जन्मान्तर से आत्मा के साथ गाढ सम्बद्ध है। यह कभी नहीं हो सकता की प्रमाणिक व्यक्ति असफल रहे। कई बार गलत निर्णय भी हो जाता है कि प्रमाणिक को असफल तथा अप्रमाणिक को सफल करार कर दिया है। लेकिन आखिर प्रामाणिक व्यक्ति या प्रतिष्ठान की ही विजय होती है।

अतः स्पष्ट तौर से कहा जा सकता है कि प्रामाणिकता के आधार पर सफलता प्राप्त की जा सकती है। अप्रामाणिकता से प्राप्त सफलता, असफलता है। ग्रहणकर्ता का अन्तरमन उसे असफलता ही घोषित करेगा।